समाद

पटना, 1-15 जनवरी, 2008 ▯ साप्ताहिक ▯ अंक-1 ▯ साल-1 ▯ इनटरनेट संस्करण ▯ पेज-6 ▯ अमुल्य

एकटा महाराज जे उद्यमी हेबाक पहिल प्रयास प्रयास केहाल

आखिर कियेक नहि विवाह अइसन सिनेमा मैथिली में में बनल

इ पलायन नहि छी, इ विस्थापन छी. बिहारी एक मात्रा एहन समूह अछि जे अपन गामक जमीन बेच के दिल्ली, मुबई में घर लैत अछि. लाज तखन होइत अछि जखन ओ बिहारी कहैत अछि बिहार में नीक सन मकानो नहि अछि भाई होयत केना. पंजाब मे नीक मकान लंदन मे रहैयवाल पंजाबी बनबैत अछि.

कतय जाइत छी, के छी हम

इंतजार खतम भेल, पाथर पर घास रोपबाक हमर इ प्रयास अछि. मिथिला-तिहिर बंद भ गेल. महाराज नहि रहलाह, के निकालत अखबार. मैथिलीक बाजार केहन अछि एकर एखन धारि मूल्यांकण नहि भेलय. एखनि धारि जे पत्रिका निकलल ओकरा निकालबाक जिम्मा एकटा गैर पत्रकारक हाथ में रहलेने. एहन में मात्र अंतिका एकटा उदाहरण अछि जे गौरीनाथ जी सन पत्रकार निकाल रहल छथि आ ओ नीक जेकां चलि रहल अछि. सवाल उठैत अछि जे आइ मिथिलाक अपन अखबार नहि अछि. मिथिलाक चिंता, मिथिलाक विकासक लेल के प्रयास करत. मैथिलक अधलाह समाचार पूरा दूनिया के भेट जाइत अछि, मुदा जे खुबी अछि, जे बदलाव भय रहल अछि या जे हेबाक चाहि ओकरा लेल वर्तमान अखबार में जगहक अभाव अछि. मिथिलाक संस्कृति पर लगातार प्रहार भय रहल अछि. काली पूजा पर दीपावली हाबी अछि. कोजागरा पर लखि पूजा छपि रहल अछि. जूड़-सितल खतम भय गेल, होली प्रभाव बढ़ल जा रहल अछि. रंगोली छपि रहल अछि, अरिपन के छापत? राम छपि रहल छैथ, सीता लेल जगह नहि अछि. विकासे लेल एकता जरूरी अछि आओर एकता लेल पहचान. आइ मैथिल अपन पहचान ताकि रहल अछि. मुख्यमंत्री किसान रूप में राजस्थानक पगड़ी पहनी रहल छैथि, मुदा हुनका अपन राज्यक पागक धयान नहि छैन. मैथिली, भोजपुरी आओर मगधक गौरवपूर्ण संस्कृतिकक संगम के बावजूद आइ हम पंजाब आओर राजस्थाक संस्कृति उधार मांगि रहल छी. कतैत गरीब छी हम? आ इ हाल रहल त गरीबे रहब. समाद निकालबाक बहुत कारण अछि ओकर चर्चा समादक पहिल अंक में करब, एखन बस एतबै कहब जे समाद मिथिला में होयवाला संपूर्ण छोट आओर पैघ घटना अहां तक पहुंचायत. हमर प्रयास मात्र मिथिलाक विकास अछि. हम कियेक गरीब छी आ हमर विकास केना होयत ऐहि संबंधा में जे अखबार छापत समाद में ओकरा साभार स्थान भेटक. हमरो लग अछि संस्कृति, हमरो लग अछि विज्ञान आओर हमरो लग अछि ओ तमाम गुण जे हमरा मराठी, बंगाली आओर तमिल जेका अगल बना सकैत अछि. हम भारतीय छी, मुदा हम भारतीय बनबाक चक्कर में कखनो पंजाबी त कखनों राजस्थानी बनि जाइत छी. एकटा हिंदी कविक कथन हमरा लोकनि पर सटीक बैसैत अछि- *दूजे को जानने कि खवाइश जो पाला मन में, सोचा नहि था अपना पहचान भूला दूंगा.*

अहांक समदिया